SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-02| Issue-04| June- 2025
Available online at: https://shikshasamvad.com/

महाकुंभ एवं राष्ट्रीय एकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जयराम

सहायक आचार्य, बी.एड. विभाग, शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय शोहरतगढ़ सिद्धार्थनगर उत्तर प्रदेश

सारांश-

कुंभ मेला दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक समारोहों में से एक माना जाता है। प्रत्येक 12 वर्ष में चार बार महाकुंभ आयोजित किया जाता है। हरिद्वार में गंगा,नासिक में गोदावरी,उज्जैन में क्षिप्रा एवं प्रयागराज में गंगा,यमुना और अदृश्य सरस्वती के तट पर महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। यह आंतरिक शांति,आत्म साक्षात्कार और आध्यात्मिक एकता के लिए मानवता की एक शाश्वत खोज है। यह पवित्र तीर्थयात्रा दुनिया की सबसे शांतिपूर्ण सभा है जिसमें आध्यात्मिक मुक्ति और शुद्ध चाहने वाले श्रद्धालु शामिल होते हैं। महाकुंभ तीर्थ यात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम है। भक्तों का मानना है की गंगा में स्नान करने से व्यक्ति पापों से मुक्त हो जाता है और जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है. इस समागम में तपस्वी, संत,साधु,आकांक्षी कल्पवासी और आगंतुक शामिल होते हैं। देश में लोग अलग-अलग धार्मिक,सामाजिक, शैक्षिक, कार्मिक एवं सांस्कृतिक समूह के सदस्य होते हुए भी राष्ट्रहित एवं राष्ट्र निर्माण के कार्यों में एक साथ खड़े होते हैं, यही हमारी राष्ट्रीय एकता का सबसे बड़ा उदाहरण है।महाकुंभ में लोग जातीय, लिंग,भाषा,संस्कृति एवं अलग-अलग संप्रदायों से शामिल होने के लिए उपस्थित होते हैं। सभी प्रकार के भेदभाव को भुलाकर लोग आपस में सहानुभूतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण भाव से शामिल होते हैं, जो राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करता है। राष्ट्रीय एकता वह भावना है जिससे लोग विविधताओं के उपरांत परस्पर मेल-जोल से रहते हैं । राष्ट्रीय एकता राष्ट्र को सशक्त एवं संगठित बनाती है। महाकुंभ में लोग गीत,संगीत, नृत्य एवं नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता में अपना योगदान देते हैं। पर्यावरण संरक्षण में भी महाकुंभ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए जन जागरूकता अभियान एवं नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जाता है। स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए एवं प्लास्टिक का उपयोग रोकने के लिए अभियान चलाए जाते हैं। अतः महाकुंभ लोगों में , सहानुभूति, सहयोग, दया,करुणा आदि नैतिक गुणों के विकास में योगदान देता है, जिससे व्यक्ति अपना आध्यात्मिक विकास कर जीवन के अंतिम उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

कीवर्ड- महाकुंभ,राष्ट्रीय एकता, संस्कृति,आध्यात्मिकता, पर्यावरण संरक्षण ।

प्रस्तावना

कुंभ का शाब्दिक अर्थ कलश होता है अर्थात घड़ा। माना जाता है कि समुद्र मंथन से जो अमृत से भरा हुआ कलश प्राप्त हुआ था। माना जाता है कि नासिक, हरिद्वार,इलाहाबाद एवं उज्जैन चार स्थानों पर अमृत की बूंदे गिराई गई थी, इसीलिए इन चार स्थानों पर तीन-तीन वर्ष के अंतर में महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। प्रयागराज को एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी के रूप में जाना जाता है। जहां प्रत्येक 12 वर्ष में गंगा, यमुना एवं आदर्श

अदृश्य सरस्वती के संगम पर महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। प्रयागराज महाकुंभ भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पहचान को प्रस्तुत करता है। हिंदू धर्म में इस शहर एवं महाकुंभ का पौराणिक महत्व भी है। कुंभ कर्मकांडों एवं धर्म से परे एक संदेश देता है,जो आस्था, धीरज और मानवीय भावना का महिमा मंडल करता है। यह समुदाय प्रकृति की पवित्रता और वास्तव में उच्च चेतना की खोज की याद दिलाता है। यह सांसारिक एवं दिव्य, ऐतिहासिक और आधुनिक, व्यक्तिगत और सामूहिकता के बीच एक सेतु का काम करता है, जो हमेशा के लिए अपने हृदय और जीवन को प्रकाश पुंज से प्रकाशित होने के लिए सांत्वना और प्रेरणा देता है। ऐसा माना जाता है कि इस पवित्र जल में डुबकी लगाने से पापों से मुक्ति मिलती है, जिससे पुनर्जन्म से मुक्ति प्राप्त होती है और मोक्ष या आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

जाति, पंथ, धर्म एवं लिंग से परे लोगों के बीच एकजुटता का संबंध राष्ट्रीय एकता है।जब लोग अलग-अलग समूह का सदस्य होते हुए राष्ट्र हित के लिए देश के साथ खड़े होते हैं। राष्ट्रीय एकता ऐसे देश में भाईचारे एवं एकता की भावना है जहां कई तरह से विविधताएं पाई जाती हैं। यह भाषा संस्कृति एवं मुख्य आजीविका में अंतर के बावजूद पूरे देश को एकजुट एवं मजबूत रखती है। एकीकृत राष्ट्र हमेशा विकास एवं समृद्धि की ओर अग्रसर होता है। राष्ट्रीय एकता लोगों को विविधता का सम्मान करना एवं उसकी पहचान करना सिखाती है। राष्ट्र के अंदर विभिन्न धर्मो, संस्कृतियों एवं समुदायों के प्रति सहिष्णुता को बढ़ावा देती है, जिससे राष्ट्र के प्रति गर्व और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा मिलता है। राष्ट्रीय एकता किसी देश के नागरिकों के बीच एक समान पहचान की जागरूकता है। व्यक्ति अलग-अलग वर्गों जातियों, धर्म एवं संप्रदायों से होते हैं और अलग भाषाएं बोलते हैं लेकिन वे इस तथ्य को पहचानते हैं कि वह एक हैं एक मजबूत एवं समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में राष्ट्रीय एकता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

आधुनिकता की आपाधापी से भरी जिंदगी में कुछ घटनाएं लाखों लोगों को एक साथ लाने की शक्ति प्रदान करती हैं। कुंभ मेला भी इन्हीं तरह के आयोजन का एक उदाहरण है। कुंभ विश्व का सबसे शांतिपूर्ण आयोजन है। यह उन करोड़ों तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करता है जो स्वयं को पापों से शुद्ध करने एवं अध्यात्मिक मुक्ति पाने के लिए पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। इसमें लोग जाति, पंथ, लिंग भाषा, एवं क्षेत्र का भेदभाव दूर कर करोड़ों लोग शामिल होते हैं। यहां मुख्य रूप से आश्रमों, अखाड़े एवं धार्मिक संगठनों के लोग होते हैं। यह आयोजन खगोल विज्ञान,ज्योतिष,अध्यात्मिक, कर्मकांड की परंपराओं और सामाजिक-सांस्कृतिक रीति रिवाजों के ज्ञान को समृद्ध बनाता है। भारत आदिकाल से महापर्व एवं उत्सव का देश रहा है। भारतीय समाज में वैदिक काल से कुंभ जैसे महापर्वों के आयोजन की विशेष परंपरा रही है। वैदिक संस्कृति में जहां व्यक्तिगत साधना से जीवन पद्धति को प्रस्तुत करने पर जोर दिया जाता था। वहीं तीर्थ स्थलों एवं महाप्रभु को राष्ट्रीय एकता एवं राष्ट्रीय चरित्र को प्रस्तुत करने का माध्यम माना गया है। महाकुंभ केवल धार्मिक आयोजन ही नहीं है बल्कि सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व को फलीभूत करने वाला आस्था का पर्व है,जहां लोग एक ओर आत्म शुद्धि एवं आत्म कल्याण का भाव रखते हैं, वहीं दूसरी ओर संपूर्ण राष्ट्र मेरा परिवार यह भाव रखकर राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करते हैं। अतः महाकुंभ को सभी संस्कृतियों का संगम और आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक माना जाता है। इसमें विभिन्न सामाजिक मिशन सांस्कृतिक गतिविधियां शामिल होती हैं जिससे यह सांस्कृतिक रूप से विविध त्यौहार बन जाता है ।इस दौरान प्राचीन धार्मिक पांडुलिपियों,मौखिक परंपराओं, ऐतिहासिक यात्रा वृतांतों और प्रसिद्ध इतिहासकारों द्वारा निर्मित एवं किताबों के माध्यम से परंपरा समाज ज्ञान और कौशल दुनिया भर में पहुंचाए जाते हैं।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

रामपाल गंगवार की पुस्तक राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में संत काव्य का अध्ययन (2001) मैं संत कवियों जैसे कभी तुलसीदास अकबर आदि की रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रवाद धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिकता की दृष्टि से विश्लेषण किया गया इसमें कबीर की हिंदू मुस्लिम एकीकरण और तुलसीदास का जाति पांति पर प्रहार जैसे विषय प्रमुख है।

एक शोध पत्र "राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव" स्वतंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों पर केंद्रित है। इसमें यशपाल की उपन्यास झूठा सच जैसे ग्रंथों का अध्ययन किया गया है जो विभाजन, धर्मनिरपेक्षता और एकता पर विशेष रूप से प्रकाश डालते हैं।

"राष्ट्र की संस्कृति एकता और प्रयागराज महाकुंभ: एक सांस्कृतिक भौगोलिक अध्ययन" (2025) में दर्शाया गया है कि महाकुंभ मात्र एक धार्मिक आयोजन नहीं है यह विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों,धर्म और सामाजिक परंपराओं को जोड़ने और संवाद का मंच प्रदान करता है। लाखों तीर्थयात्रियों का संगम सांस्कृतिक एकता को बल देता है।

कुंभ एवं संस्कृति

भारत की संस्कृति को आक्रमणकारी एवं उपनिवेशवादियों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिनका उद्देश्य इसके सांस्कृतिक ताने बाने को खत्म करना था। आक्रमणकारियों ने मंदिरों को निशाना बनाया है जो न केवल पूजा स्थल थे बल्कि शिक्षा,कला,संगीत, नृत्य एवं संस्कृति आदि के केंद्र थे। इन चुनौतियों की बावजूद भारत का संस्कृत लचीलापन समय की कसौटी पर खड़ा उतरा। कुंभ आयोजन संस्कृत पुनर्गठन में महत्वपूर्ण भूमिका पता करता है। लोग देश की अलग-अलग संस्कृतियों का सम्मान करते हुए आपसी एकता को बढ़ावा देते हैं। कुंभ में उपस्थित सभी नागरिक सांस्कृतिक विचारों एवं तरीकों को साझा कर सांस्कृतिक एकता को मजबूती प्रदान करते हैं।

कुंभ एवं लोक संगीत

महाकुंभ में गीत, संगीत,नृत्य आदि के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। विभिन्न राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों से आए हुए कलाकारों द्वारा अलग-अलग क्षेत्र के लोकगीत, नृत्य एवं नाटकों का मंचन किया जाता है। कजरी, कत्थक,गरबा, आल्हा, डांडिया आदि की प्रस्तुति लोगों में आपसी सौहार्द एवं सद्भाव पैदा करती है जो राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करते हैं। महाकुंभ के अवसर पर मध्य प्रदेश संस्कृत विभाग द्वारा 13 जनवरी से 26 फरवरी तक प्रयागराज में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर शास्त्रीय उप शास्त्रीय लोक एवं जनजातीय गायन,दन नृत्य,भक्ति संगीत, लीला नाट्य और आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाएगा। जिसमें मुख्यतः बघेली भजन,नौरता नृत्य, सैला नृत्य,हनुमान लीला नाटक,घोड़ा पैठाई नृत्य, बुंदेली भजन, बरेदी नृत्य,भारिया जनजाति का भड़न नृत्य,हरदा का काठी नृत्य एवं कथक समूह नृत्य आदि होगा।

कुंभ एवं पर्यावरण संरक्षण

महाकुंभ में पर्यावरण संरक्षण हेतु कई प्रयास किए जाते हैं। लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए जन जागरूकता अभियान एवं नुक्कड़ नाटक आयोजित किए जाते हैं। शहर की दीवारों पर स्वच्छता संबंधी कलाकृतियां बनाकर जनसंदेश दिए जाते हैं। पर्यावरण को प्लास्टिक मुक्त करने के लिए हरित कुंभ नामक अभियान चलाए जा चुके हैं। प्लास्टिक का उपयोग कम करने के लिए दोना, पत्तल एवं कुल्हड़ का इस्तेमाल किया जाता है।अपशिष्ट पदार्थ एवं कचरे का पुनर्चक्रण एवं उचित निपटान हेतु व्यापक अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली का इस्तेमाल किया जाता है।

महाकुंभ में पर्यटन विकास

महाकुंभ केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि के साथ-साथ पर्यटन विकास का भी एक बड़ा माध्यम है। जब करोड़ों श्रद्धालु और पर्यटक देश विदेशी महाकुंभ में आती हैं तो स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन को नई दिशा मिलती है। श्रद्धालु गंगा स्नान, साधु संतों के दर्शन और धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने के लिए यहां पहुंचते हैं। महाकुंभ की भव्यता को देखने और भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं को समझने के लिए बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटक भी आते हैं इससे भारत की वैश्विक छवि मजबूत होती है। महाकुंभ के समय होटल रेस्टोरेंट परिवहन हस्तशिल्प और स्थानीय व्यापार में तीजा आती है।न्धौधदौधोधौइससे पर्यटन उद्योग स्थानीय अर्थव्यवस्था दोनों को लाभ होता है महाकुंभ के आयोजन के दौरान सड़कों को रेलवे हवाई अड्डे स्वच्छता जल आपूर्ति और सुरक्षा जैसी सुविधाओं का विस्तार किया जाता है जो आगे भी पैटर्न को बढ़ावा देती है। महाकुंभ के माध्यम से भारत की प्राचीन

परंपराएं कला और संस्कृति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित होती है ।यह सांस्कृतिक पर्यटन को मजबूत करती हैं इस प्रकार महाकुंभ न केवल अध्यात्म एकता का प्रभाव किया पर्यटन विकास संस्कृत प्रसार और आर्थिक नीति का की प्रभावशाली माध्यम है।

महाकुंभ एवं सामाजिक एकता

महाकुंभ में सभी लोग गंगा स्नान करने एक साथ आते हैं अमीर- गरीब, उच्च -निम्न ,स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं रहता है इससे सामाजिक समानता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है। भारत के कोने-कोने से अलग-अलग भाषा, वेशभूषा और परंपरा वाले लोग महाकुंभ में आते हैं यह विविधताओं के बीच सामाजिक एकता का संदेश देता है। महाकुंभ में विभिन्न राज्यों और समुदायों की सांस्कृतिक झलक देखने को मिलती है लोग एक दूसरे की परंपराओं को समझने और अपना आती हैं जिससे आपसी मेलजोल बढ़ता है इस विशाल आयोजन में लाखों लोग सेवा कार्यों भोजन, दवा, सहायता एवं मार्गदर्शन से जुड़ते हैं इससे समाज में सहयोग और मानवीय संवेदनाएं गहरी होती हैं। अलग-अलग संप्रदायों और समुदायों के लोग मिलकर शांति और भाईचारे का वातावरण बनाते हैं, इससे सामाजिक तनाव और दूरी घटती है। महाकुंभ पूरी दुनिया को दिखाता है कि समाज किस तरह आस्था और संस्कृति के माध्यम से जुड़ सकता है यह" एक भारत श्रेष्ठ भारत" और वसुधैव कुटुंबकम की भावना को साकार करता है। इस प्रकार महाकुंभ सामाजिक स्तर पर सामान्य भाईचारे सहयोग और एकता की भावना को प्रबल बनाता है और समाज को जोड़ने वाली कड़ी का काम करता है। कल्पवास की परंपरा समाज की विभिन्न वर्गों को एकत्रित करती है ।संगम पर हर क्षेत्र और जाति के लोग एकत्र होते हैं इस सामाजिक भेदभाव कम होता है और समानता का संदेश मिलता है इस एक महीने के दौरान लोग साधारण जीवन जीते हैं जो उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के विपरीत एक आदर्श जीवन शैली प्रस्तुत करता है।

आध्यात्मिक एकता में महाकुंभ की भूमिका

महाकुंभ भारत की प्राचीन और विशाल आध्यात्मिक परंपराओं में से एक है इसका आयोजन हर 12 वर्ष में गंगा यमुना और सरस्वती के संगम प्रयागराज एवं अन्य तीर्थ स्थलों हरिद्वार ,उज्जैन ,नासिक में होता है। महाकुंभ में वैष्णो सेवा सख्त बौद्ध जैन सिख आदि विभिन्न मतों और संपदाओं के साधु संत एक साथ पहुंचते हैं यह विविधता में एकता का संदेश देता है। साधु संतों की तपस्या, प्रवचन एवं साधारण जन की श्रद्धा दोनों मिलकर आध्यात्मिक ऊर्जा का वातावरण बनाते हैं। महाकुंभ में गंगा स्नान केवल शरीर शुद्धि नहीं बल्कि आत्म शुद्धि और सामूहिक पवित्रता का भाव है ।लाखों लोग एक साथ स्नान कर समानता और बंधुत्व का अनुभव करते हैं। महाकुंभ में शास्त्रार्थ प्रवचन और चर्चा होती है जहां विभिन्न विचारधाराओं के लोग एक दूसरे से सीखते हैं इससे एक व्यापक आध्यात्मिक दृष्टि विकसित होती है ।महाकुंभ न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व को यह संदेश देता है कि आस्था और आध्यात्मिक से मनुष्य एक दूसरे से जुड़ सकते हैं। महाकुंभ आध्यात्मिकता का महापर्व है जहां विविध विचारधाराएं एक साथ आकर "वसुधैव कुटुंबकम" की भावना को साकार करती हैं। तीर्थयात्रा दान, सेवा और भक्ति के माध्यम से व्यक्ति में विनम्रता, करुणा और समर्पण की भावना विकसित होती है जो आध्यात्मिक प्रगति का आधार है। महाकुंभ में लोग जाति, धर्म और क्षेत्र की सीमाओं से ऊपर उठकर एकता और बंधुत्व का अनुभव करते हैं ।यह सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों स्तर का विकास के मार्ग को प्रशस्त करता है। इस प्रकार महाकुंभ व्यक्ति को आत्मशुद्धि, ज्ञान,साधना, भक्ति एवं समर्पण के माध्यम से आध्यात्मिकता की ओर ले जाता है। अतः महाकुंभ एक धार्मिक मेला नहीं है बल्कि यह एक आत्मिक शुद्ध और आध्यात्मिक विकास का एक महान अवसर है इसमें भाग लेने वाले साधु-संत अपने जीवन में गहन अनुभव प्राप्त करते हैं।

महाकुंभ का महत्व

महाकुंभ का पर्व सनातन धर्म की ऐसी दिव्य परंपरा है जो कालांतर से आस्था और मानवता के सर्वोत्तम आदर्शों को संगठित करती है । कुंभ मेला न केवल व्यक्ति को बल्कि समाज और राष्ट्र को भी दिशा प्रदान करता है।यह सनातन धर्म का अभिन्न अंग है।महाकुंभ न केवल भारतीय समाज में व्याप्त शुद्धता, समानता, भाईचारा और दिव्यता के संदेश को प्रसारित करता है बल्कि यह सामाजिक एकता का प्रतीक भी है। यहां सभी धर्म, जाति, वर्ग एवं

© Shiksha Samvad| Received: 01 June 2025 | Accepted: 05 June 2025 | Published: 11 June 2025

समुदाय के लोग एकत्र होते हैं। महाकुंभ में न केवल सामाजिक समरसता की भावना होती है बल्कि यहां भारतीय संस्कृति के मूल्यों की भी अभिव्यक्ति होती है। महाकुंभ में आस्था,श्रद्धा और विश्वास की जो सुगंध फैल रही है उसे महसूस किया जा सकता है। महाकुंभ अपने आध्यात्मिक महत्व से परे स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत करता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान और एकता के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह ऐतिहासिक रूप से भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सामाजिक सुधारों और राष्ट्रवादी आंदोलन का स्थान रहा है ,जो राष्ट्र की सामाजिक राजनीतिक ताने बाने में इसकी भूमिका को प्रदर्शित करते हैं। महाकुंभ से धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है जिससे भारत की आध्यात्मिक छवि बनती है और वैश्विक स्तर पर एक सकारात्मक छवि भी बनती है और भारत को आर्थिक दृष्टि से लाभ पहुंचता है ।महाकुंभ के दौरान लाखों पर्यटक भारत आते हैं इससे विदेशी मुद्रा के प्रवाह के साथ यह स्थानीय और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी प्रोत्साहित करता है। इसके माध्यम से भारत की आर्थिक सॉफ्ट पावर भी बढ़ती है। जो भारत के वाणिज्यिक संबंधों को वैश्विक स्तर पर सशक्त करती है। महाकुंभ भारत की राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाने का एक अवसर बनता है। यह विभिन्न देशों से आने वाले नेताओं और प्रतिनिधियों को राजनीतिक संवाद का अवसर प्रदान करता है। महाकुंभ समाज सेवा, परोपकार एवं सामाजिक सहयोग को भी बढ़ावा देता है। महाकुंभ के दौरान कई धार्मिक

और सामाजिक संगठन समाज सेवा के कार्य में लगे रहते हैं मुफ्त भोजन वितरण शिक्षा सेवाएं, पानी की सुविधा और अन्य आवश्यकताएं प्रदान करने के लिए अनेक संगठन काम करते हैं यहां लोगों के बीच में परोपकार और समाज सेवाओं की भावना स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालु और तीर्थ यात्री भी समाज सेवा में भाग लेते हैं जो एक सकारात्मक संदेश देते हैं।शांति और आध्यात्मिक मार्ग केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक प्रयासों से ही सरकार होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

किसी भी देश के लिए राष्ट्रीय एकता बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि मानव जाति के इतिहास में कई बार ऐसा देखा गया है कि जब किसी देश की अखंडता खतरे में पड़ गई तो उसे देश के भीतर बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा और विदेशी हमलों का भी शिकार होना पड़ा है। राष्ट्रीय एकता की कमी के दुष्परिणामों के रूप में सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद,भाषावाद, नक्सलवाद एवं आतंकवाद आदि को देख सकते हैं कट्टरपंथी विचार वाले लोग गरीब एवं मजदूर वर्ग के दिमाग धोते हैं और देश के खिलाफ भड़काते हैं। इन सभी को समस्याओं से बचने के लिए देश में राष्ट्रीय एकता बनाए रखना अति आवश्यक है। महाकुंभ में लोग बिना किसी जाति,भाषा,पंथ एवं संस्कृति के भेदभाव के आपसी सद्भाव से एक साथ हर्ष एवं उल्लास के साथ शामिल होते हैं, जिसमें अलग-अलग प्रांतों से आए हुए लोग लोकगीत, नृत्य एवं नाटक आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी अपनी संस्कृति एवं रीति रिवाज से परिचय कराते हैं जिसके द्वारा लोग दूसरों की संस्कृति का सम्मान करते हुए स्वयं की संस्कृति को साझा करते हैं। अतः महाकुंभ राष्ट्रीय एकता में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने हेतु निम्नलिखित कार्य किया जा सकते हैं-

1. भारत की भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को सम्मान देते हुए एक साझा राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करना।
2. विद्यालय और कॉलेज में राष्ट्रीय एकता दिवस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम और सांप्रदायिक सद्भाव पर विशेष कक्षाओं का संचालन करना।
3. राष्ट्रीय एकता के सकारात्मक संदेश और प्रेरणादायक कहानियां ऑनलाइन साझा करना,अफवाहों और नफरत फैलाने वाले कंटेंट का खंडन करना।
4. ईद, दिवाली, पोंगल, बिहू एवं होली जैसे त्योहारों में सभी की समान भागीदारी करना।
5. स्वयंसेवी संस्थाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी को एकता सद्भाव से जुड़े सेवा कार्यों जैसे सफाई, रक्तदान एवं आपदा सहायता में जोड़ना।

© Shiksha Samvad| Received: 01 June 2025 | Accepted: 05 June 2025 | Published: 11 June 2025

References-

• Ananda(Hindu philosophy). (2023, October 18). Wikipedia. https://en.wikipedia.org/wiki/%C4%80nanda(Hindu philosophy) retrieved on 20/01/2025

• Maha Kumbh retrieved from https://en.m.wikipedia.org on 24.01.2025

• Maha Kumbh 2025| District Prayagraj, Government of Uttar Pradesh| India retrieved from https://prayagraj.nic.in on 24.01.2025

• The Triad for Happiness by Nagraj, 1999. (n.d.). ResearchGate. https://www.researchgate.net/figure/The-Triad-for-Happiness-by-Nagraj-1999_fig2_353218994 retrieved on 11.04.2024

• गुप्ता, डॉ. शरद. (2016). "कुंभ मेला: सुसंस्कृति और विकास ". एम.जी. रोड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश. नेशनल पब्लिकेशन हाउस।

• तमश्र, डॉ. अुंजतल. (2011). "भारत के धार्मिक आयोजन". ए-32, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली।

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

जयराम , "महाकुंभ एवं राष्ट्रीय एकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 2, Issue 4, pp.254-259, June 2025. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

जयराम

For publication of research paper title

"महाकुंभ एवं राष्ट्रीय एकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/